|| लेखक मानवता के प्रति प्रतिबध्द होता है ||

चिन्तन मनन विचारशीलता एवं सामाजिक उत्थान के मनोयोग के बसन्त में ही रचना के अंकुर फूटते है । यही दृढ अंकुर कभी कभी कालजयी कृति बन जाते है। साहित्यकार आस्था विश्वास,सामाजिक न्याय एवं दर्शन को शदियों से हस्तानान्तरित करते आया है। समय के संवाद को शब्द का अमृतपान कराकर मानव कल्याण हेतु लिपिबध्द करते आया है, जो साहित्यकार की वचनबध्दता है । साहित्यकार सामाजिक मूल्यों की स्थापना के लिये प्रतिबध्द होता है क्योंकि साहित्यकार/लेखक के माध्यम से विचार आगे बढता है। पाठकों तक पहुंचते है । रचनाकार के माध्यम से आगे बढे विचार वाद से मुक्त होते हैं । राष्ट्रीय एकता सामाजिक समरसता एवं मानवीय समानता को समर्पित रचनाधर्मिता ही लेखक को लोकप्रयिता के शिखर पहुंचा सकती है ।

लेखक वैचारिक रूप से प्रतिबध्द होता है । वैचारिक प्रतिबध्दता लेखकीय स्वतन्त्रता को बाधित नही करती है । हां यदि विचार कट्टरवादिता के शिकार हो जाते है लेखकीय स्वतन्त्रता पर प्रतिघात होता है । यह प्रतिघात रूढवादिता को द्योतक होता है । विचार रूढवादिता,धर्मान्धता अथवा जातीयता से ओतप्रोत हो जाते है तो वास्तव में ये विचार विचार नही रह जाते । लेखक भी विवाद के घेरे में आ जाता है । यदि रचनाकर अपने दायित्व के प्रति प्रतिबध्द है तो कबीर की भांति उसके विचारों को मूर्त रूप अवश्य मिलेगा ।उसके पाठको/समर्थको/शुभचिन्तको का लम्बी जमात खडी हो जायेगी परन्तु रचनाकार द्वारा दिया गया विचार कल्याणकारी हो,बहुजन हिताय बहुजन सुखाय का मन्तव्य रखता हो । यदि रचनाकार विषयवस्तु के साथ न्याय करता है तो ऐसे विचार सभ्य समाज के बीच जरूर जगह बना लेते है ।

लेखक/साहित्यकार को सर्वोच्य स्थान प्राप्त है । रचनाकार महज रचनाकार ही नही होता इसके अतिरिक्त भी वह और भी बहुत कुछ होता है । राजनेता सिर्फ राजनेता होता है।राजनेता से कही अधिक लेखक का उत्तरदायित्व समाज के प्रति बनाता है ।इस उत्तरदायित्व का निर्वहन रचनाकार अपनी रचनाओं के माध्यम से पूरा करता है । लेखक जनसमान्य के लिये भी आदर्श होता है । जनसामान्य लेखक के व्यक्तित्व को उसकी रचनाओं में ढूढता है । इन्ही जनसामान्य के माध्यम से लेखकीय विचार आगे बढते है । सर्वमंगलकारी मानवमात्र को विचार इतिहास रचते है ।

सच्चा रचनाकार व्यक्ति विशेष को खुश करने अथवा पुरस्कार पाने के लिये नही लिखता । वह तो देश और समाज के हितार्थ लिखता है । चमक दमक से दूर आंकाक्षाओं को खुद के वशीभूत किये हुए सर्वकल्याणार्थ लेखन कर्म में जुटा रहता है । वह अपने विचार को समय की कसौटी पर तराशकर समाज को देता है ।ऐसे विचार जनमानस को काफी सीमा तक प्रभावित करते है ।लेखक का विचार गंगाजल की तरह होता है । उसके विचार समाज देश के भले के लिये होते है । भले ही रचनाकार/साहित्यकार समाज देश के भले की अभिलाषा में रूगणावस्था में पहुंच जाये । लेखक अपनी प्रतिबध्दता से विचलित नही होता । उसे तो बस समाज को कुछ देने की ललक रहती है । यही ललक उसे एक अलग पहचान देती है।समय का पुत्र बना देती है ।

लेखक के विचार रूके हुए नही होते समय के साथ आगे बढते रहते है। लेखक का उद्देश्य होता है कि लेखनकर्म के प्रति उसका समर्पण समाज को ऐसा विचार दे जिससे समाज का हित सध सके ,सामाजिक बुराईया के खिलाफ लामबन्द स्थिति बने जो सामाजिक सद्भावना एवं समरसता स्थापित कर सके । लेखक की प्रतिबध्ता ही उसके विचार की गतिशीलता का परिचायक है । बहुजन हिताय को केन्द्र बिन्दु में रखकर लेखन करने वाले लेखक के विचार तो थमे नही। यदि विचार रूकता है तो वह किसी ना किसी वाद अथवा रूढवादिता का शिकार होता है । ऐसे विचार रूके हुए पानी की तरह होते है जो समाज को स्वस्थ नही कर पाते हां बीमारियां जरूर परोसते है ।सच्चा रचनाकार ऐसे विचारों को कभी भी पर नही लगाता क्योंकि ऐसे विचारों के आघात की नब्ज को वह पहचानता है। सच्चे विचार समाज को दिशा देते है। लेखक पहले एक व्यक्ति होता है जो लेखक/साहित्यकार व्यक्ति बने रहकर रचनाधर्मिता का निर्वहन कर रहे है। ऐसे मानवतावादी कलमकारों को कोटिशः नमन् ।

नन्दलाल भारती